भगिनी निवेदिता महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) में "औपनिवेशिक आख्यानों से स्वदेशी इतिहास की ओर: भारतीय ज्ञान परंपराओं के माध्यम से अतीत का पुनःअधिग्रहण" विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन दिनांक 10 अप्रैल 2026 को सम्पन्न हुआ। इस संगोष्ठी का आयोजन ब्रह्मवादिनी, भारतीय ज्ञान परंपरा अध्ययन केंद्र (IKSC) एवं इतिहास विभाग द्वारा विद्वत परिषद तथा भारतीय इतिहास संकलन योजना समिति (दिल्ली प्रांत) के सहयोग से किया गया। इस महत्वपूर्ण अकादमिक आयोजन में देशभर से विद्वानों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः 10 बजे वंदे मातरम् के सामूहिक गायन के साथ हुआ, जिसने पूरे वातावरण को राष्ट्रभावना से ओतप्रोत कर दिया। इसके पश्चात दीप प्रज्वलन (स्तुति) के माध्यम से कार्यक्रम का औपचारिक उद्घाटन किया गया, जो ज्ञान एवं प्रकाश का प्रतीक है। तत्पश्चात दिल्ली विश्वविद्यालय का कुलगीत प्रस्तुत किया गया, जिसने संस्थागत गरिमा और सांस्कृतिक परंपरा को सुदृढ़ किया। उद्घाटन सत्र में संगोष्ठी की संयोजक डॉ. निर्मल पांडेय ने विषय-प्रस्तुति करते हुए संगोष्ठी के मूल उद्देश्य पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह संगोष्ठी औपनिवेशिक इतिहास लेखन की सीमाओं को चुनौती देते हुए भारतीय ज्ञान परंपराओं के आधार पर इतिहास के पुनर्पाठ का एक गंभीर प्रयास है। इसी क्रम में संगोष्ठी स्मारिका का विमोचन भी किया गया।

उद्घाटन सत्र में अनेक विशिष्ट वक्ताओं ने अपने विचार प्रस्तुत किए। महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. रूबी मिश्रा ने अपने उद्बोधन में शिक्षा के सांस्कृतिक एवं नैतिक आयामों को रेखांकित करते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता पर बल दिया। महाविद्यालय के अध्यक्ष प्रो. राजेश सिंह ने इतिहास लेखन में भारतीय दृष्टिकोण को सशक्त बनाने की आवश्यकता पर अपने विचार व्यक्त किए। कोषाध्यक्ष प्रो. उमा शंकर ने संस्कृत साहित्य एवं प्राचीन भारतीय ग्रंथों में निहित ऐतिहासिक स्रोतों की महत्ता को रेखांकित किया। मुख्य वक्ता प्रो. आर. एस. शुक्ल ने अपने व्याख्यान में भारतीय इतिहास लेखन की परंपरा, उसकी पद्धति तथा औपनिवेशिक प्रभावों की गहन समीक्षा प्रस्तुत की और भारतीय स्रोतों के पुनर्पाठ की आवश्यकता पर बल दिया। मुख्य अतिथि डॉ. बालमुकुंद पांडेय ने भारतीय इतिहास के स्वदेशी दृष्टिकोण को पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता पर जोर देते हुए युवा शोधार्थियों को इस दिशा में सक्रिय योगदान हेतु प्रेरित किया। अंत में प्रो. सुषमा राणा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया।

कल्याण

संगोष्ठी के अंतर्गत चार तकनीकी सत्र आयोजित किए गए, जिनमें लगभग 80 शोधार्थियों एवं विद्वानों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री नीरज डंगवाल ने की, जबकि विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रो. उमा शंकर उपस्थित रहे और संचालन डॉ. शाहीन द्वारा किया गया। इस सत्र में वैदिक परंपरा, प्राचीन भारतीय स्रोतों एवं इतिहास लेखन के वैकल्पिक दृष्टिकोणों पर केंद्रित शोध प्रस्तुत किए गए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. धर्म चंद चौबे ने की, विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रो. प्रीति उपस्थित रहीं तथा संचालन डॉ. दीपक कुमार ने किया। इस सत्र में औपनिवेशिक विमर्श एवं भारतीय इतिहास की पुनर्व्याख्या से संबंधित महत्वपूर्ण शोधपत्र प्रस्तुत हुए। तृतीय सत्र में अध्यक्षता प्रो. संतोष कुमार शुक्ल ने की, विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रो. युथिका मिश्रा उपस्थित रहीं तथा संचालन डॉ. डी. के. मिश्रा द्वारा किया गया। इस सत्र में भारतीय ज्ञान परंपरा, संस्कृति एवं समाज के अंतर्संबंधों पर गंभीर विचार-विमर्श हुआ। चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता प्रो. नलिनी माथुर ने की, विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ. सुषमा राणा उपस्थित रहीं तथा संचालन सुश्री मयूरी द्वारा किया गया। इस सत्र में समकालीन संदर्भों में भारतीय इतिहास की प्रासंगिकता पर विचार प्रस्तुत किए गए।

Bhagini Nivedita College, University of Delhi
Brahmavadini, IKSC & Department of History
in collaboration with
Vidvata Parisada,
Bhāratīya Itihāsa Sankalana Yojanā Samiti, Delhi Prant
National Conference
From Imperial Narratives to Indigenous Histories:
Reclaiming the Past Through Indian Knowledge Traditions

समापन सत्र अत्यंत सारगर्भित एवं प्रेरणादायक रहा। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. कपिल कुमार ने की, जिन्होंने अपने उद्बोधन में संगोष्ठी के बौद्धिक निष्कर्षों को समेटते हुए भारतीय दृष्टिकोण से इतिहास लेखन की आवश्यकता पर बल दिया। मुख्य अतिथि प्रो. इन्द्र मोहन कपाही ने अपने विचार रखते हुए इस प्रकार के अकादमिक आयोजनों को राष्ट्र निर्माण की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण बताया। इसके पश्चात संगोष्ठी की संयोजक प्रो. सुषमा राणा द्वारा विस्तृत प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए तथा धन्यवाद ज्ञापन के साथ संगोष्ठी का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

समग्र रूप से यह राष्ट्रीय संगोष्ठी भारतीय इतिहास के पुनर्पाठ एवं पुनर्निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण एवं सार्थक प्रयास सिद्ध हुई। इसमें प्रस्तुत शोधपत्रों एवं विद्वानों के विचारों ने भारतीय ज्ञान परंपराओं के आलोक में इतिहास लेखन की नई दिशाओं को उद्घाटित किया तथा अकादमिक विमर्श को समृद्ध किया।